'मृच्छकटिकम्' के तृतीय अङ्क का कथानक

तृतीय अंक के प्रथम दृश्य में चारुदत्त का चेट (सेवक) रंगमंच पर आता है। आधी रात बीत चुकी है। संगीत का आनन्द उठाने के लिए ~~गया~~ गया हुआ चारुदत्त अभी तक वापस नहीं आया है। चेट ~~(संवाहक)~~ स्वाभाविक दोष की निन्दा करके सोने के लिए चला जाता है।

तृतीय अंक के दूसरे दृश्य में चारुदत्त और विदूषक रंगमंच पर आते हैं। वे रोभिल का गाना सुनकर वापस लौटते हैं। चारुदत्त रोभिल के संगीत की प्रशंसा करता है। किन्तु विदूषक को अच्छा नहीं लगता है। वह शीघ्र ही घर चलने को कहता है। दोनों घर पहुँचकर चेट (वर्धमानक) को बुलाते हैं। वह दरवाजा खोलता है। वे दोनों भीतर प्रवेश करते हैं। पैर धोने के प्रश्न पर विदूषक और वर्धमानक में कुछ विवाद होता है। चारुदत्त और विदूषक पैर धोकर सोने की तैयारी करते हैं। चेट कहता है कि रात में स्वर्णभाण्ड की रखवाली विदूषक को करनी है। अतः उसे (विदूषक को) स्वर्णभाण्ड सौंप देता है। स्वर्णभाण्ड लेकर मैत्रेय (विदूषक) और चारुदत्त सोने लगते हैं।

तृतीय अंक के तीसरे दृश्य में शर्विलक प्रवेश करता है। वह चौर्यकला में अपनी निपुणता की प्रशंसा करता है। वह सेंध काटकर चारुदत्त के घर में प्रविष्ट हो जाता है। विदूषक स्वर्णभाण्ड की रक्षा की दुश्चिन्ता में परेशान है। वह स्वप्न में बड़बड़ाता है और चोरी हो जाने के भय से वह स्वर्णभाण्ड चारुदत्त को देना चाहता है। किन्तु शर्विलक-चोर उस स्वर्णभाण्ड को ले लेता है। वापस निकलते समय अचानक रदनिका आ जाती है। वह वर्धमानक को न देखकर

Scanned with CamScanner

विदूषक को बुलाने के लिए जाती है। शर्विलक उसे मारना चाहता है किन्तु स्त्री समझ कर उसे छोड़कर घर से बाहर हो जाता है। रदनिका शोर मचाती है। विदूषक और चारुदत्त जागते हैं। चारुदत्त उस कलात्मक सेंध को देखकर उसकी प्रशंसा करता है। विदूषक स्वप्न में चारुदत्त को दिए गए स्वर्णभाण्ड की चर्चा करके अपनी बुद्धिमानी बताता है। सुनकर चारुदत्त प्रतिवाद नहीं करता है क्योंकि उसे यह जानकर सन्तोष है कि परिश्रम करके घर में घुसने वाला चोर खाली हाथ नहीं गया है। किन्तु जब चारुदत्त को यह स्मरण कराया गया कि वह स्वर्णभाण्ड तो वसन्तसेना की धरोहर है तो वह चारुदत्त मूर्छित होकर गिर जाता है। वह होश में आकर सोचता है कि लोग घटना की सत्यता पर विश्वास नहीं करेंगे; क्योंकि वह निर्धन है। वह दुःखी हो जाता है। इस घटना की जानकारी उसकी धर्मपत्नी धूता को होती है। वह भी बहुत दुःखी हो जाती है। अपने पति को लोकापवाद से बचाने के लिए वह अपने मातृगृह से प्राप्त कीमती रत्नमाला विदूषक को दे देती है। विदूषक चारुदत्त के पास ले जाता है और वसन्तसेना को देने के लिए रोकता है। परन्तु चारुदत्त अपनी प्रतिष्ठा सुरक्षित रखने के लिए वह रत्नमाला वसन्तसेना के पास भेज देता है। वह चोरी की घटना की निन्दा को बचाने के लिए वर्धमानक से सेंध बन्द करने के लिए कहता है और स्नान आदि करके सन्ध्या-वन्दन आदि के लिए चला जाता है।

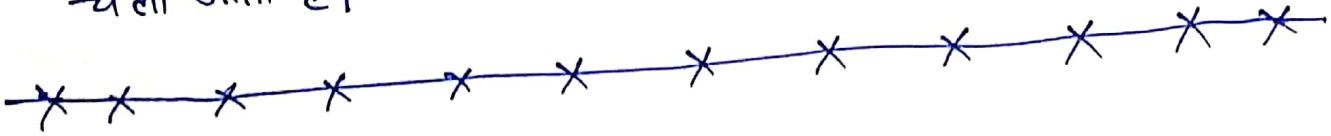

Scanned with CamScanner